SHODHASAMHITA
शोधसंहिता
ISSN 2277-7067
UGC CARE Group 1

चित्रा मुद्गल के कथा साहित्य में नारी की भूमिका

Jv’n कल्पना शर्मा
शोधार्थी, विभाग – हिंदी, ज्योति विद्यापीठ विमेंस यूनिवर्सिटी, जयपुर (राजस्थान)
E-Mail bhardwajkalpana330@gmail.com

Jv’n डॉ. चित्रा
शोध निर्देशिका, ज्योति विद्यापीठ विमेंस यूनिवर्सिटी, जयपुर (राजस्थान)

सारांश : हिन्दी साहित्य में नारी जीवन को रेखांकित करने में महिला रचनाकारो में साहित्यकारा चित्रा मुद्गल की भूमिका अहम है। इन्होने अपनी कथाओं के माध्यम से नारी को कई रूपों में आंका है जो अपने अस्तित्व की रक्षा और आत्मसम्मान के लिए रिश्ते, नाते, संस्कार आदि सब छोडने का साहस रखती है` । रमेश दवे जी उनके बारे में कहते हैं कि – “चित्रा के सृजन का शिल्प चट्टानी सच्चाईयों के बीच स्वेद की तरह बह-बह कर निकलता है । इसलिए वे ठण्डे स्वेद कणों का शिल्प न रचकर ऐसे कटीबंध तलाशती है, जो सतत उष्मावान है और जिसमें संकल्प की ऑच हर समय आवॉ की तरह गरमी का अहसास करती है। लेकिन आग आक्रोश नही बनता ।’’[1]

चित्रा मुद्गल नारी समाज की एक सशक्त प्रहरी है इन्होने अपने उपन्यासों और कहानियों में नारी जीवन से जुडी हर समस्या से साक्षात्कार करवाया है और बताया कि किस तरह जुल्म सहने वाली औरत अपनी आत्मरक्षा और आत्मसम्मान को बचाने के लिए हर सीमा लांघ जाती है और उस मुसीबत से बाहर निकल कर स्वतंत्र रूप में अपनी मर्जी से अपना जीवन नये सिरे से जीती है। और यही संदेश देती है कि आज की नारी सब पर भारी है।

मूल शब्द:- साहित्य, राजनीति, नारी, सम्मान, महिला सशक्तिकरण, यौनशोषण,

प्रस्तावना:- चित्रा जी बचपन से ही निर्भीक एवं जिज्ञासु प्रवृति की रही हैं। साहित्य, संगीत और कला के प्रति इनका रूझान था। साहित्य जगत में चित्रा मुद्गल किसी परिचय की मोहताज नहीं हैं। करीब आधी सदी से वे सक्रिय लेखन कर रही हैं एवं विभिन्न प्रतिष्ठित राष्ट्रीय व अंतराष्ट्रीय पुरस्कार अपने नाम कर चुकी हैं। वे देश की प्रतिष्ठित विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं के लिए नियमित लेखन भी करती रही हैं। कई लेखों के माध्यम से साहित्य जगत में लेखिकाओं की उपेक्षा के दर्द को भी उन्होने सामने लाने का प्रयास किया है । इनके लेखों में स्त्री जीवन की प्रमुख समस्याओं को साहित्यकारा ने उठाया हैं। भले ही मुद्दा चुनाव में, कार्यस्थल पर, परिवार में समानता के अधिकार का हो, घरेलू हिंसा, घूंघट-बुर्के का हो, साहित्य में लेखिकाओं की बराबरी का हो, महिला सशक्तिकरण या यौन शोषण का हो, हर मुद्दे को

उन्होने बेबाकी से उठाया हैं। उन्होने न सिर्फ आम जनमानस का ध्यान इन प्रत्यक्ष-परोक्ष विषयों की ओर आकृष्ट किया हैं बल्कि कुछ सुझाव भी दिये हैं।

हमारे समाज में स्त्री की नही अपितु बालिकाओं के साथ भी भेदभाव हर स्तर पर देखा गया है। खाने-पीने, ओढने-पहनने, शिक्षा मे स्त्री का गौण या उनकी उपलब्धि को कम आंका गया है। दूध नामक लघु कथा के माध्यम से चित्रा जी ने ऐसी ही त्वरित पर कडा प्रहार किया है कि जब बेटी के दूध पीने की इच्छा जताने पर ''मां कहती है कि दूध पीकर क्या तुमको लठैत बनना है, दूध घर के मर्द पीते है, दूध पी रही थी कमीनी''।[2] फिर बालिका का प्रतिवाद कि एक बात पूछू मां आंसू भीगी उसकी आवाज की ढीठ हो आई, ''मैं जन्मी तो दूध उतरा था तुम्हारी छातियों में तो मेरे हिस्से का छातियों का दूध भी क्या तुमने मर्दो को पिला दिया था।''[3] इसी प्रकार कहानी ताशमहल की नायिका का घर और कार्यालय में संघर्ष करती कई बार टूट कर बिखर जाती है, पर अपने पुत्र के लिए खडी हो जाती है। गेंद कहानी में वृद्ध आश्रम का जीवन बडी संजीदगी और सजीवता से उकेरा है, बच्चे एकमात्र मकान अपने नाम करवा चुके है और एक ही शहर में रहने पर भी किसी तीज-त्यौहार पर माता-पिता को याद नहीं किया जाता है और मरणोपरान्त पल्ला झाडते हुए संवेदनहीन समाज की अर्थी निकलती है। भूख कहानी में एक अभावग्रस्त मां भूख से पीडित अपने बच्चे को भिखारिन को इस उम्मीद से देती है कि वह उसे कुछ खाने को देगी पर जब सांझ के समय बालक की तबियत बिगड जाती है और भूख से तडप-तडप कर बच्चे की मृत्यु हो जाती है तो मां की ममता बिलख पडती है। अभी कहानी की नायिका अपने पति की मृत्यु हो जाने पर मुत्यु पर मिली राशि और दहेज की मांग पर अपनी सास द्वारा प्रताडित रहती है और अंत मे साहस के साथ चीख पडती है और कहती है कि "बाबूजी मुझे जीवित देखना चाहते है, तो यहां से फौरन निकाल कर ले चलिए अभी भी वक्त है।"[4] चेहरे कहानी में रेलवे स्टेशन से पुलिस सभी भिखारियों को बाहर निकालती है तभी वहां की एक महिला भिखारिन आक्रोशित हो वहा के सिस्टम की पोल खोलती दिखाई देती है।

लेखिका ने अपनी कहानी द्वारा समुचित संदेश देने की कोशिश की है। आज समाज में नारी पीडित और त्रस्त है लेकिन नारी स्वयं भी किसी को प्रताडित करती है यह उन्होने अपनी कहानी 'एक काली और एक सफेद' में दर्शाया है कि किस प्रकार नायिका अपने उग्र और हठी स्वभाव से अपने पति और बेटी के जीवन में भूचाल लाती है और मारपीट के दौरान उसके पति के सिर में चोट भी लग जाती है। यहा लेखिका ने समाज को यह दिखाने का प्रयास किया है कि स्त्री हमेशा सही नही होती कभी गलत भी होती है। 'जगदम्बा बाबू गॉव आ रहे है' कहानी मे गरीबी की भयावह और एक मां की ममता और अपने अपाहिज बच्चे के लिए कुछ न कर पाने की विवशता को दर्शाया है इसमें ठाकुर सुमेर सिंह की सेवा-चाकरी से मिली सीमित आमदनी के कारण सुक्खन भौजी का पुत्र 'बासी पनेथी बुकनू चुपडकर' अपनी क्षुधा पूर्ति करता है।''[5] आर्थिक तंगी के कारण वह जांघो पर झूलती पैबंद लगी जांघिया पहनकर नंगे पॉव स्कूल जाता है, अपने पुत्र को पायजामा और पॉवों मे चप्पल पहनाकर मदरसे भेजने की सुक्खन भौजी की आकांक्षा स्वपन ही बना रहता है।

विद्रोहात्मक मनोवृत्ति आधुनिकता की देन है। डॉ. कामिनी तिवारी इस संबंध में कहती है कि "नारी की जडता तब तक नहीं टूटती, जब तक वह स्वयं विद्रोह नहीं करती, न्याय की मॉग नहीं करती। उसे पॉव तले जमीन चाहिए, जो ठोस हो। समाज में वह अपने

उन दृढ पॉवों पर खडे होकर अपने अस्तित्व की रक्षा करें, उसे सुरक्षित स्थितियों का अहसास हो। सुरक्षित स्थितियों में ही आत्मविश्वास उत्पन्न होता है। अपने प्रति स्वयं उत्तरदायीहोने का गौरव और सिर ऊंचा करके आकाश छू लेने का उत्साह होता है। उत्साह यदि हर श्वास में आ समाये तो जडता का अंधकार दूर हो सकता है।''[6]

वर्तमान भौतिकवादी समाज के वर्ग-वैषम्य के बहुआयामी परिदृश्यों की वास्तविक स्थितियों और परिणामों को चित्रा जी ने बहुत ही जीवन्त रूप में अपने उपन्यास आवां में चित्रित किया हैं। जहॉ एक ओर रोजी-रोटी उपार्जन में श्रमिकों की जिन्दगी है, जो पूजीपतियों के हितों के लिए बलि चढ जाती है या चढा दी जाती है । वही दूसरी ओर संजय कनोई जैसे करोडपति उद्योगपतियों के वैभव का अखण्ड साम्राज्य है, जहॉ रूपम, कलानिकेतन, रूपमलिन के कीमती सूफियाना कलात्मक वस्त्र धारण किए हुए धन्ना सेठ अपनी सुरूचि और सम्पदा का परिचय देकर अपने वैभव का सिक्का गरीबों के मनो-मस्तिष्क पर अंकित करते चलते है। संजय कनोई के समक्ष नमिता पांडे द्वारा आभूषण-प्रदर्शन का प्रसंग, ग्रीन रूम की कीमती कलात्मक साज-सज्जा, बल्वों की सजावट पर खर्च किया गया धन, कार्यक्रम प्रस्तुति में पंडित जसराज द्वारा गायी गीत-गोविन्द की स्वर लहरियों की गूज, हंसिनी सी तैरती आभूषण प्रदर्शन करती खूबसूरत बालाए, उच्चवर्गीय अभिजात्य गौरव का ही यशोगान है। अपने वर्ग और अर्थ की महत्व के मनोविज्ञान का बहुत ही बारीकी से विश्लेषण करते हुए अंजना वासवानी नमिता से कहती है- ''पैसे की ताकत से एक बुद्धिहीन, अपाहिज, असमर्थ व्यक्ति बुद्धिमान का मस्तिष्क और सबल की शक्ति खरीद, बडी आसानी से अपने हितों के लिए उसका उपयोग कर समाज और संसार का सर्वाधिक समर्थ व्यक्ति बन सकता है, सत्ताधारी बन सकता है, प्रतिष्ठा अर्जित कर सकता है। लोगो पर शासन करने के लिए नोट की शक्ति पहचानो। सुख-सुविधायें जुटाने में उसकी भूमिका की कद्र करो। नोट से ही तुम अपने बाबूजी के लिए बेहतर इलाज खरीद सकती हो और भाई-बहनों के लिए उज्ज्वल भविष्य। हर हाल में एक बडा नोट सोने के अंडे देने वाली मुर्गी की भांति तुम्हें अनगिनत नोट देगा, जैसा कि बहुत पहले मेरे पर्स में सुरक्षित रखे नोट ने किया।''[7]

चित्रा जी ने अपने उपन्यास एक जमीन अपनी में एक कामकाजी स्त्री की अस्मिता के प्रश्न को उठाया है। विज्ञापन का साम्राज्य, जो स्वयं बडे-बडे व्यापार ग्रहों के यहॉ बंधक है। हमारे समाज में नारी की यौन-शुचिता एक संवेदनशील और समस्यामूलक मुद्दा रहा है। इस मान्यता के चलते स्त्री या तो जीवन भर के लिए कुंठित हो जाती है या आत्महत्या कर लेती है या सती हो जाती है या सारी उम्र विधवा के रूप में काट लेती है और इन सबके विपरित फिर वह वेश्या बनने को मजबूर हो जाती है। हर तरह का स्त्रीवादी विमर्श इस मुद्दे से अवश्य टकराता है लेकिन समस्या का सम्यक समाधान आज तक खोजा नहीं जा सका। महिलाओं को पुरूषों के साथ काम करने में असुविधा और पुरूषों के स्वभाव का वर्णन करते हुए चित्रा जी अपनी नायिका के माध्यम से कहती हैं- ''औरते चाहे भीड में चल रही हों या भीड-भाड से दूर पुरूष उन्हे घूरने से नहीं चूकते। वैसे भी अधिकांश पुरूष उसे रावण के वंशज प्रतीत होते है, जिनकी दस जोडी भुजायें ही नहीं, दस जोडी ऑखें भी है, जो राडार की भॉति स्त्रियों की गतिविधियों को सूंघती, बारीक से बारीक हरकत को दर्ज करती रहती है।''[8]

SHODHASAMHITA
शोधसंहिता
ISSN 2277-7067
UGC CARE Group 1

वर्तमान में स्त्री शोषण की नई-नई स्थितियॉ उभरने लगी है। चित्रा जी ने अपने साहित्य में महिलाओं के साथ होने वाले अत्याचार और शोषण की विभिन्न स्थितियों को प्रमुखता से स्थान दिया है। लेखिका के कथा-साहित्य में वर्तमान स्त्री के जुझारूपन और संघर्षशील का यथार्थ रूप चित्रित हुआ है। ''मै किसी भी स्त्री को हल्के में लेना बरदाश्त नहीं कर पाती ..... उससे सहमति-असहमति के बावजूद''[9] - यह चित्रा मुद्गल जी के स्त्री विमर्श का केन्द्रीय स्वर है। यह सूक्त वाक्य जो एक ओर तो स्त्री मुद्दों पर लेखिका की सुपरिभाषित पसंद और सुपरिचित पूर्वाग्रहों का उद्घोष है, तो दूसरी ओर उनकी सुस्पष्ट जुझारू पोजीशन का दावा भी प्रस्तुत करता है।

चित्रा जी के साहित्य की नायिकाए समाज की परम्पराओं का विरोध करती है। उनके साहित्य की अहम नायिका अंकिता नारी के उस स्वरूप का प्रतिनिधित्व करती है जो सोच के प्राचीन और जड ढॉचे को तोडकर एक नए युग की शुरूआत करना चाहती है। इसी आधार पर चित्रा मुद्गल के स्त्री विमर्श का अहम हिस्सा स्त्री की देहधर्मी पहचान के इर्द-गिर्द बुना गया है। ''एक जमीन अपनी में लेखिका ने अंकिता बनाम नीता तथा आवां मे नमिता बनाम स्मिता-गौतमी जैसी विरोधाभासी चरित्रों के माध्यम से देह के जरिये सफल स्त्रियों के मानसिक खोखलेपन का विशद चित्रण करती है।''[10]

बंबई के महानगरीय जीवन की सच्चाई को चित्रित करती कहानियॉ और खासकर झोपडपट्टी के जीवन के यथार्थ और त्रासदियों के चित्रण में तो चित्रा मुद्गल का कोई सानी नहीं है। चित्रा जी की खासियत है कि उन्हें अपनी ओर से कुछ कहना नही पडता, पात्र और उनसे जुडी समस्याए स्वतः ही सब कुछ कह देती है। समाज और नारी के प्रति चित्रा जी की पैनी नजर होने के कारण कहानियों में नारी वर्ग प्रमुख रूप से उभरकर सामने आता है। हर परिस्थिति में स्त्री वर्ग की मानसिकता का सूक्ष्म चित्रण चित्रा जी के साहित्य सृजन की प्रमुख विशेषता है। समाज में नारी की स्थिति, परिवार और नौकरी का दोहरा उत्तरदायित्व, पति की शंकालू प्रवृति, स्त्री की अपनी समस्याए आदि नारी जीवन के विभिन्न पहलुओ को उन्होने छुआ है। अपने लेखन को महिलापन से बचाते हुए चित्रा जी ने अपनी कहानियों में वर्गीय सीमाओं का अतिक्रमण कर निम्नवर्ग के पक्षधर साहित्यकारा के रूप में भी अपनी उपस्थिति दर्ज कराई है।

आज निम्न वर्ग और मध्यम वर्ग समाज मे अपने आचार, व्यवहार, रक्त सम्बन्धों का निर्धारण जब धननीति से करने लगे तब पूंजी के स्वामी उच्च वर्ग की मनोवृत्ति और भावनाओं का संचालन सूत्रों का धनाक्रांत होना स्वभाविक है। यह सभी मनोदशाऐ चित्रा जी ने अपने साहित्य में वास्तविक चित्रण किया है। अपनी वापसी, एक जमीन अपनी और आवां में उच्चवर्गीय भावदशाओं के अनेक दृश्य अभिव्यंजित है। अपनी वापसी की नायिका शकुन अपने बच्चों के रवैये, धन को सर्वस्व समझने वाली सोच और अपनी उपेक्षा से निराश होकर विचार करती है कि यह ''कुछ छिछली सी मनोवृत्ति है, अपनी बोली लगाने जैसी। जिसे आज का युवा वर्ग प्रतिष्ठा के प्रतिमान के रूप में तमगों सा लटकाए, अपनी श्रेष्ठता-अश्रेष्ठता में जीता, उसी से औरों को प्रभावित और आतंकित करने की चेष्टा में रत है।''[11]

उच्चवर्गीय समाज में रिश्ते घर की निर्जीव वस्तु के समान एक उपकरण और औपचारिक संबोधन मात्र बनकर रह गए है। सभ्य समाज कहे जाने वाले उच्च समाज में पति वर्ग बहुत ही बेशर्मी के साथ अपनी पत्नियों को दूसरे पतियो के साथ अदला-बदली करने में व्यस्त है, इस कथा को चित्रा जी ने अपनी वाइफ स्वैपी कहानी में दर्शाया है। आवां उपन्यास में गौतमी की अभिजात्य गर्वीली

मानसिकता अपने पति नामक प्राणी का परिचय कुछ इस तरह से कराती है- ''मॉ के अलावा घर में एक अदद पति है-नाम है अशोक। ठीक उसी तरह जिस तरह घर में आलमारी है, फ्रीज है, वांशिग मशीन है, डिशवाशर है।''[12] इसी तरह एक जमीन अपनी की नीता भी आज के भोगवादी उन्मुक्त जीवन की चाह में समस्त रिश्तों को तिलांजलि देकर पैसा कमाने की चाह में सिनेमा और मॉडलिंग को अपने कैरियर के रूप में चुनती है।

निष्कर्ष:- चित्रा जी के समग्र जीवन एवं साहित्य का अध्ययन करने पर उनकी एक अलग छवि पाठक के हृदय में समा जाती है। उनके साहित्य में झॉकने वाले पाठक वर्ग को अपनी अनुभूतियों की प्रतिछाया जब उसमें दिखाई देती है तो पाठक भाव-विभोर हो जाता है। उनके सभी पात्र विशेषकर नारी पात्र अपने परिवेश में जीवन की जद्दोजहद से जूझते-लडते कभी लहुलुहान होते है तो कभी उस लडाई में विजय हासिल करते दिखलायी देते है। यही कारण हे कि चित्रा जी अपने प्रारंभिक लेखन काल से लेकर आज तक बराबर सम्मानित और समादरित बनी रही और भविष्य में भी बनी रहेगी।

चित्रा जी ने अपनी रचनाओं में भारतीय संस्कृति व राष्ट्रीय नैतिक मूल्यों को पूर्ण ईमानदारी के साथ प्रस्तुत किया है। उनके कथा साहित्य का विश्लेषण करने के बाद एक तथ्य स्पष्ट रूप से उभरकर आता है कि लेखिका ने अपनी सूक्ष्म अंतः दृष्टि के बलबूते पर नारी को आज के युग और ज्वलंत संदर्भो की पीडाओं, विसंगतियों व उपेक्षाओं के परिपेक्ष्य में उजागर करने के लिए नारी की भूमिका को अपनी रचनाओं में न सिर्फ अभिव्यक्ति दी है बल्कि एक जागरूक कथाकार के रूप में समाज के भीतर तक पहुंचने का प्रयास किया है। उस प्रयास को उनकी लेखनी ने एक अरसे से पत्र-पत्रिकाओं तथा पुस्तकों के माध्यम से वृहत, पाठक वर्ग तक संप्रेषित करती रही है और सदैव करती रहेगी। यही उनकी साहित्य में श्रीवृति है, यही उपलब्धियॉ है और यही उनका अवदान है।

चित्रा जी ने अपने साहित्य में स्त्री और पुरूष दोनो में मनोविज्ञान को उद्घाटित कर अपने लेखकीय सरोवर के लिए जगह का निर्माण किया है। उनकी कहानियों में ग्राम्य परिवेश से लेकर बिछुए, सिंदूर उतारती आधुनिक नीता तक के स्त्री पात्रों का वेशिष्ट्य समाहित है। सामान्य गृहीणी की स्थिति से लेकर नौकरीपेशा स्त्रियों की भूमिका और चेतना तक, फिल्मी जगत के विज्ञापन से लेकर, पत्रकारिता के अन्याय के प्रतिकार में कडी स्त्री भंगिमा के साथ नारी के राजनैतिक, धार्मिक और आर्थिक प्रस्थान उसके अधिकार, कर्तव्य बदलती स्थितियों में नारी की भूमिका और योगदान आदि पर बडी ही समग्रता और संतुलित दृष्टिकोण से विचार किया है। उसके साहित्य का केन्द्रीय स्वर यही है। ''स्त्री, स्त्री की शत्रु या स्त्री देह मात्र नही है। उनके नारी चरित्र अन्याय और शोषण के विरूद्ध नारी जागरण और मुक्ति के संदेशवाहक है।''[13]

अंत मे कहा जा सकता है कि प्रत्यक्ष जीवनानुभवों की भित्ति पर ही समस्याओं को चित्रा जी ने रचनात्मक आयाम प्रदान किये है और लेखन जगत ही क्रांति चेष्टा के भीतर लोक-मंगल का पथ प्रशस्त करता है। लेखिका समाजिक पुनर्निर्माण और संरचना के लिए साहित्य को एक कारगर विकल्प के रूप में मान्यता प्रदान करती है।

ISSN 2277-7067
UGC CARE Group 1

संदर्भ सूची:

1.रमेशदवे:आवॉ हिन्दी उपन्यास में श्रम का शिल्प और आंच का संकल्पः मधुमति जून 2000, पृ सं 203

2.पुष्पगंधा - दूध कहानी, पृ सं 39

3.पुष्पगंधा - दूध कहानी, पृ सं 39

4.अभीभीकहानी- चित्रा मुद्गल, पृ सं 51

5. जगदम्बा बाबू गॉव आ रहे है-चित्रा मुद्गल, पृ सं 11

6.प्रभा खेतान के साहित्य में नारी विमर्श- डॉ. कामिनी तिवारी, विद्या प्रकाशन, कानपुर, सं.2011, पृ सं 91

7.आवां-चित्रा मुद्गल, पृ सं 201

8. आदि-अनादि-2-चित्रा मुद्गल, दरमियान, पृ सं 171

9. चित्रा मुद्गल के कथा-साहित्य का समाजशास्त्र-डॉ. दयानन्द तिवारी, पृ सं 163

10. शब्द शिखर संयुक्तांक, 2005 पृ सं 51

11. मामला आगे बढेगा-चित्रा मुद्गल, पृ सं 95

12. आवां-चित्रा मुद्गल, पृ सं २१

13 सन्दर्भ हिन्दी अनुशीलन, मार्च 2003, पृ सं 40-41